

# 小窗自纪



[小窗自纪\\_下载链接1\\_](#)

著者:吴从先撰

出版者:中华书局

出版时间:2008-9-23

装帧:平装16开

isbn:9787101062502

《小窗自纪》原书四卷，明万历年间有刻本行世。全书数百则，洋洋洒洒，舒展自如，议论的范围几乎涵盖了人生的各个方面，于平淡中作惊人之语，在清新疏朗的字句中寄寓着深刻的哲理

作者介绍:

目录:

前言	第1则	第2则	第3则	第4则	第5则	第6则	第7则	第8则	第9则	第10则	第11则	第12则	第13则	第14则	第15则	第16则	第17则	第18则	第19则	第20则	第21则	第22则	第23则	第24则	第25则	第26则	第27则	第28则	第29则	第30则	第31则	第32则	第33则	第34则	第35则	第36则	第37则	第38则	第39则	第40则	第41则	第42则	第43则	第44则	第45则	第46则	第47则	第48则	第49则	第50则	第51则	第52则	第53则	第54则	第55则	第56则	第57则	第58则	第59则	第60则	第61则	第62则	第63则	第64则	第65则	第66则	第67则	第68则	第69则	第70则	第71则	第72则	第73则	第74则	第75则	第76则	第77则	第78则	第79则	第80则	第81则	第82则	第83则	第84则	第85则	第86则	第87则	第88则	第89则	第90则	第91则	第92则	第93则	第94则	第95则	第96则	第97则	第98则	第99则	第100则	第101则	第102则	第103则	第104则	第105则	第106则	第107则	第108则	第109则	第110则	第111则	第112则	第113则	第114则	第115则	第116则	第117则	第118则	第119则	第120则	第121则	第122则	第123则	第124则	第125则	第126则	第127则	第128则	第129则	第130则	第131则	第132则	第133则	第134则	第135则	第136则	第137则	第138则	第139则	第140则	第141则	第142则	第143则	第144则	第145则	第146则	第147则	第148则	第149则	第150则	第151则	第152则	第153则	第154则	第155则	第156则	第157则	第158则	第159则	第160则	第161则	第162则	第163则	第164则	第165则	第166则	第167则	第168则	第169则	第170则	第171则	第172则	第173则	第174则	第175则	第176则	第177则	第178则	第179则	第180则	第181则	第182则	第183则
----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------	-------

· · · · · · [\(收起\)](#)

[小窗自纪\\_下载链接1](#)

标签

吴从先

随笔

明清小品文

古典文学

杂文随笔

中国古典文学

中华经典随笔

明清

## 评论

傲骨，侠骨，媚骨，即枯骨可致千金；冷语，隽语，韵语，即片语亦重九鼎。

-----  
相当于古人微博日记体..

-----  
瘦到梅花应有骨，幽同明月且留痕。。德润身，富润屋。。花看水影，竹看月影，美人看帘影。。海市蜃楼，奇观总属乌有。因知天下饱眼之物，色色空华。。宁风霜自挟，无宁鱼鸟亲人。。春不管花落花开。。凡天下可怜之人，皆不自怜之人。。山水花月之际看美人，更觉多韵。

-----  
每天读几则，神清气爽... 个别点评有些苍白，减去一星...~

-----  
夜读晚明吴从先《小窗自纪》百则，甚好！小窗先生讲，数无无穷，运不长厄，士君子能旋乾转坤，则否泰为我转轴。俺进而想，秦末陈胜讲:王侯将相，宁有种乎？三国吴虞翻讲:芝草无根，醴泉无源！主席讲:数风流人物，还看今朝！皆元气充沛，志向豪迈。

-----  
闲倚小窗，坐拥流年。瘦到梅花应有骨，幽同明月且留痕。雪满山中高士卧，月明林下美人来。  
英风未畅，转生无聊；幽韵纵扬，终归寥落。是以热血有时成碧，雄心无日可灰。  
文何为声色俱清？曰：松风、水月，未足比其清华。何为神情俱澈？曰：仙露、明珠，讵能方其朗润。清斋幽闭，时时暮雨掩梨花；冷句忽来，字字秋风吹木叶。  
良缘易合，红叶亦可为媒；知己难投，白璧未能获主。

-----  
我愿看人面目可憎。

-----  
怡然

-----  
已购 仿作 注解古板 不喜欢

-----  
最爱晚明小品的警句迭出。希望今人日记能学其精髓。

-----  
蓬窗夜启，月白于霜。渔火沙汀，寒星如聚。

-----  
小情调。古代人

-----  
借着初春的午后,品茗细读.

-----  
评差注也差，而且太长。

-----  
想读一本闲情逸致，能细细嚼来、品来的，古色古香的、回味隽永的书。  
||记得当时拿着在新校区湖边看来着，蛮有味道。

-----  
随笔有灵气而不迂腐，最讨厌长篇大论的之乎者也

-----

评注很尴尬

-----  
虽然我喜欢明清小品，但我觉得此书一般，不及小窗幽记多矣，更遑论与幽梦影相比，此文没有文采，读来犹如嚼蜡，极少有写的很有意思的。现在想来，张潮的幽梦影真是文采斐然，更重要的是那种洒脱的心态，让我沉迷。

-----  
古人的笔记真是有意思

-----  
有些收获。

-----  
[小窗自纪\\_下载链接1](#)

书评

-----  
[小窗自纪\\_下载链接1](#)